मिथिलाक पावनि-तिहार

मिथिलामे व्रत-उपवास ओ पावनि-तिहारक सुदीर्घ ओ समृद्ध परम्परा रहल अछि । ई भौगोलिक क्षेत्र सुदृढ़ आध्यात्मिक पृष्ठभूमिक लेल चिरकालसँ प्रसिद्ध अछि । मिथिलाक लोककेँ सीमित साधन छनि, एहि सीमित साधनमे शान्ति ओ सन्तोषसँ रहय चाहैत छथि । आ एहिमे अपन इष्टक पूजा-अर्चनासँ आध्यात्मिक तृप्ति चाहैत छथि, इएह कारण थिक जे सालो भरि एहि पावनि-तिहारक क्रम लगले रहैत अछि । साओनमे मधुश्रावनी, भादोमे कृष्णाष्टमी ओ चौरचन, आश्विनमे दुर्गापूजा, कार्तिकमे दियाबाती ओ छठि, अगहनमे नवान्न, पूसमे तिलासंक्रान्ति, माघमे सरस्वती पूजा, फागुनमे फगुआ, चैतमे रामनवमी, वैसाखमे जूड़ शीतल आदि ।

एहि पावनि-तिहारक मूलतः दू गोट उद्देश्य छैक–पहिल सामाजिक दृष्टिकोण जगाकऽ ओकर निर्वाह करब आ दोसर आत्मशुद्धि । एकर अतिरिक्त सात्विक वृत्तिक वृद्धि सेहो होइत छैक । किछु पावनि एहन अछि जाहिमे सभ समाज हिलि-मिलि कऽ मनबैत छथि जेना- दुर्गापूजा, फगुआ आदि । एहिसँ सामाजिकता बढ़ैत अछि । समस्त समाज आपसी मतभेदकेँ बिसरि धूम-धामक संग मनोरंजन करैछ ।

किछु पावनि तिहार स्वास्थ्य रक्षा एवं व्यावहारिकताक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि, जेना-चौरचन, छठि आदि पावनिमे प्रचुर मात्रामे दूध-फल, आदि प्रयुक्त होइछ, जे स्वास्थ्य बर्द्धक थिक । जूड़शीतल एक-दोसराक देह पर थाल-कादो लगयबाक प्रथा अछि, तकर प्राकृतिक चिकित्सामे पंक-स्नानक खास महत्त्व अछि । पंक-स्नानसँ ग्रीष्मक प्रचंड तापसँ होमय वाला रोग नहि होइत अछि ।

उपर्युक्त पावनि-तिहारक महत्त्वकेँ देखैत मिथिलाक मनीषी लोकनि लगभग 101 गोट पावनि-तिहार ओ व्रत-उपवासक परम्पराक उल्लेख कयने छथि। एहिठाम मुख्य पर्वक विवरण देब हम समीचीन बुझैत छी–

मौना पंचमी ओ नाग पंचमी- एहि पावनि दिन मैथिल पाँच पथिया चिक्कनि माँटि अनैत छथि। ओहि माँटिक पाँच गोट थुम्हा बनबैत छथि। ओहि थुम्हाक बीचमे दूभि साटि दैत छथि आ सिन्दूर-पिठार लगाय दैत छथि। घरक दुआरिक दुनू भाग गोबरसँ फेंच काटने नागक चित्र बनाओल जाइछ। नव बासनमे खीर-घोरजाउर रान्हल जाइत अछि। बिसहराक पूजा कऽ हुनका दूध, लाबा चढ़ाओल जाइछ। धामिक-पात, नेङरा कुश, नीमक पात, अमनौआ दाड़िम, आमक पखुआ, तथा झोआ नेबो चढ़ाओल जाइछ। एकर बाद सभ केओ तीत कोत, नीम पात आ खीर-घोरजाउर खाइत छथि।

संध्याकाल मूसक माटि, धानक लाबा, बंगौर, कटैल तथा उलटा सरिसो एकटा चंगेरामे लऽकऽ बिसहराक मंत्रसँ अभिमंत्रित कराय घर-आंगन, बारी-झारीमे छीटल जाइछ। दन्त कथा छैक जे एहि तरहेँ आराधना कयलासँ लोक सर्पदंशसँ मुक्त रहैछ।

मौना पंचमी श्रावण मासक कृष्णपक्ष पंचमी कऽ आओर नागपंचमी शुक्ल पक्ष पंचमी कऽ मनाओल जाइछ। ई बिसहरा पाँचो बहिनिक पर्व थिक।

मधुश्रावणी - मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनमे मधुश्रावणी पावनिक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। ई पावनि श्रावण कृष्णपञ्चमीसँ आरम्भ भऽ तेरह दिन चलैत अछि। मिथिलाक बाहर ई पावनि नहि मनाओल जाइछ। नवविवाहिता कन्या श्रावण मासमे नागपूजा करैत अपन सोहागक दीर्घ कामना करैत छथि। मधुश्रावणी कथा पौराणिक तथा दन्तकथाकेँ आधार बनाय तेरह दिन धरि कहल जाइछ।

नवविवाहिता कन्या-सासुरसँ आयल साड़ी, लहठी पहिरि पूजा स्थल पर अबैत छथि । पातिल, पुरहर आ कलशवाला अरिपन पर किछु बालु राखि जलसँ सींचि उपरसँ किछु धान राखि दैत छथि । एकर बाद कलशमे जल भरि उपरसँ एकटा आमक पल्लव रखैत छथि, आ पातिलमे दीप लेसि दैत छथि । गीतहारि सभ गीत शुरू करैत छथि । नैवेद्य, फूल, चानन, बेलपात, धूप, दीप आदिक व्यवस्था कऽ मंत्रोच्चारणक संग गौरीक पूजा प्रारम्भ होइछ ।

एहि प्रकारेँ पहिल दिन मौना पंचमीक कथा दोसर दिन बिहुलाक ओ मनसाक कथा तेसर दिन पृथ्वीक कथा एवं क्रमे तेरह दिन धरि पूजा-पाठ होइत रहैत अछि ।

राखी– राखी भाइ बहिनिक एकटा प्रसिद्ध पर्व थिक । ई मिथिलेटामे नहि, आनहुँ प्रान्तमे मनाओल जाइछ । परम्पराक अनुसार राखी गुरुजन अथवा पुरोहितसँ बन्हाओल जाइछ । गुरुजन अपन आशीष मंत्रक संग राखी बन्हैछ । शिष्य गुरुजनकेँ किछु दक्षिणा दैछ ।

मुदा आजुक युगमे मिथिलामे आने प्रान्त जकाँ बहिन भाइकेँ राखी बन्हैत छथि । बहिन भाइक सुरक्षाक कामना करैत मधुर खुअबैत छथि । भाइ बहिनकेँ किछु दान दैछ ।

कृष्णाष्टमी– देवकीक गर्भसँ उत्पन्न, वसुदेव पुत्र, भगवान श्री कृष्णक जन्म भादव कृष्ण अष्टमी कऽ भेल छल, एहि शुभ अवसर पर प्रतिवर्ष जन्मोत्सव मनाओल जाइछ । धर्मशास्त्र सभमे एहि व्रतक प्रसंग बहुत विचार कयल गेल अछि । कृष्णाष्टमी व्रत दू प्रकारक होइत अछि । पहिल-जन्माष्टमी व्रत तथा दोसर कृष्णाष्टमी व्रत ।

मैथिल कृष्णाष्टमीसँ एक दिन पूर्व अर्वा-अर्वाइन खाय प्रातः काल उपवास करैत छथि । दिन भरि निराहार रहि संध्याकाल फलाहार करैत छथि ।

कृष्ण भगवानक प्रतिमाक दर्शन कयलाक बाद भोजन करैत छथि ।

ठाम-ठाम भगवान कृष्ण, देवकी, वसुदेव, नंदजी आदिक प्रतिमा बनाय धूम-धामसँ पूजा अर्चना कयल जाइत अछि । दोसर दिन संध्याकाल प्रतिमा सभकेँ नदी अथवा पोखरिमे प्रवाहित कऽ देल जाइछ ।

चौठचन्द्र- भादव शुक्ल चतुर्थीकेँ चौठचन्द्र पर्व मनाओल जाइत अछि । एहि दिन चन्द्रमाक पूजा होइत अछि । ई पावनि मिथिलामे मिथिला नरेश हेमांगद ठाकुर प्रारम्भ करौने छलाह । हुनका एहि दिन एकटा विशिष्ट फल प्राप्त भेल छलनि, ताहि शुभ अवसर पर एहि पर्वक प्रचार-प्रसार अपन राज्य मिथिलामे करौलनि । ई पावनि भारतक अन्य प्रांतमे नहि होइत अछि ।

पवनैतिन भरिदिन निराहार रहैत छथि । संध्याकाल आंगनमे अरिपन करैत छथि । अरिपन पर दहीक छांछ, फल, पुरी, पायस (मड़र) मधुर, कलश आदि राखि आसन पर बैसि मन्त्रक संग पूजा प्रारम्भ करैत छथि । परिवारक सभगोटे हाथमे फल लऽ कऽ चन्द्रमाकेँ प्रणाम करैत छथि । तदुपरान्त परिवारक सभ सदस्य प्रसाद ग्रहण करैछ ।

जितिया- मिथिलामे जितिया-व्रत प्रत्येक पुत्रवती द्वारा कयल जाइछ, किएक तँ एहि व्रतक माहात्म्य असीम अछि । एकरा कयलासँ पुत्रवतीक पुत्रक अनिष्ट नहि होइत छनि ।

गंधर्व वंशक शालिवाहन राजा जीमूतकेतु पुत्र जीमूतवाहन छलाह, जनिक विवाह मलयवतीसँ होइत छनि । ओ माता, पिता तथा स्त्रीक मोह छोड़ि वृद्धाक एकमात्र पुत्र शंखचूड़ नागकेँ बचयबाक लेल हर्ष पुरस्सर गरुड़क भक्ष्य बनैत छथि । जीमूतवाहनकेँ प्राण त्याग करैत देखि हुनक माता, पिता ओ स्त्री करुण क्रन्दन करैत छथि । अन्तमे गौरी मलयवतीक करुणासँ पसीझि जीमूतवाहनकेँ

जिआय दैत छथि तथा चक्रवर्ती राजा बनबैत छथि । गरुड़ सेहो अपन कुकर्मक प्रायश्चित्त करबाक हेतु स्वर्गसँ अमृतक वर्षा करबाय समस्त नागवंशकेँ पुनर्जीवित करैत छथि ।

जितिया दिन भोरे लोक चूड़ा-दही-चीनी खाइत छथि । माँछ, मड़ुआक रोटी, आ नोनीक साग खाइत छथि । पुत्रवती महिला व्रत करैत छथि । झिंगुनीक पात पर नैवेद्य देल जाइछ अछि ।

शारदीय नवरात्र (दुर्गापूजा) : जगद्धात्री, शक्ति स्वरूपा माता दुर्गाक पूजा औपचारिक रूपमे आश्विन मासक शुक्ल पक्षक प्रतिपदासँ प्रारम्भ होइछ तथा नवरात्रि धरि देवीक पूजा-अर्चना चलैत अछि । हिनक पूजा बहुत विधि-विधान ओ निष्ठाक संग होइछ । मिथिलामे छागर बलिदान पड़ैत अछि । कतेको ठाम महिषक बलि सेहो देल जाइछ । दशमी रात्रिमे बहुत धूम-धामक संग प्रतिमाक विसर्जन होइछ ।

दुर्गा दुर्गतिनाशिनी थिकीह । हिनका निकट कोनहुँ अत्याचारी दैत्यक गमन सम्भव नहि । हिनक अवतरण आओर पूजनक सम्बन्धमे अनेक तरहक कथा सभ अछि । महिष नामक असुर जखन बहुत उत्पात मचौलक तँ दुर्गा जी हुनक संहार कयलनि, एही हेतुएँ हिनका 'महिषासुर मर्दिनी' कहल जाइछ । दुर्गा माता शुंभ-निशुंभ नामक असुरक संहार सेहो कयलनि तेँ हिनका 'शुंभ निशुम्भ संहारिणी' कहल जाइछ । ई चंड-मुंड नामक राक्षसक विनाश कयलनि ताहि हेतुएँ हिनका 'चामुंडा' कहल जाइछ । राम द्वारा लंका विजयक पश्चात् नौ दिन धरि उत्सव मनाओल गेल । तेँ एकरा 'विजयादशमी' सेहो कहल जाइछ ।

'दुर्गा सप्तशती'मे हिनक अनेक नामक उल्लेख अछि, जेना कात्यायनी, गौरी, काली, शिवा, रुद्राणी, सर्वमंगला, चंडिका, अंबिका आदि ।

कोजगरा– ई पावनि प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ल पूर्णिमाकें मनाओल जाइछ । नव विवाहित वरक सासुरसँ मधुर-मखान आदि भार अबैत अछि । संध्याकाल दोआरि परसँ भगवतीक चिनवार धरि अरिपन कयल जाइत अछि । भगवतीकें लोटाक जलसँ घर कयल जाइछ हिनका चिनवार पर कमलक अरिपन कऽ घरक प्रतिष्ठित महिला पूजा करैत छथि । पान-मखान आदि भोग लगैछ आ प्रसाद बाँटल जाइछ ।

रात्रिमे वर सासुरसँ आयल नव वस्त्र धारण कऽ पीढ़ी पर बैसैत छथि, तहन हुनक चुमाओन होइत छनि । चुमाओनक बाद वर उठि अपनासँ जेठकें प्रणाम करैत छथि । आमन्त्रित समाजकें पान-मखान परसल जाइछ ।

दियाबाती– प्रत्येक वर्ष कार्त्तिक मासक अमावस्या दिन दियाबाती पर्व मनाओल जाइछ । एक कथाक अनुसारें जखन पुरुषोत्तम राम रावणक संहार कऽ अयोध्यापुरी आपस अयलाह ताहि खुशीमे घर-घरमे दिया जराकऽ ई उत्सव मनाओल गेल आओर तहियासँ एहि पर्वक शुभागमन भेल । दोसर कथाक अनुसारें जखन श्री कृष्ण अन्यायी नरकासुरक विनाश कयलनि तहियासँ ई प्रकाश पर्व मनायब प्रारम्भ भेल । तेसर कथाक अनुसारें जहिया वामन विराट दैत्यराज बलिक दानशीलताक परीक्षा नेने छलाह आ हुनक दर्प-दलन कयने छलाह, तहिएसँ हुनक स्मृतिमे ई आलोकोत्सव मनाओल जाइछ । चारिम कथाक अनुसार जैनधर्मक महान तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर एही दिन पृथ्वी पर अपन अन्तिम ज्योति पसारि महाज्योतिमे विलीन भेल छलाह । पाँचम कथाक अनुसार आधुनिक भारतीय समाजक निर्माता तथा आर्य जगतक मन्त्रद्रष्टा स्वामी दयानन्दक सेहो निर्वाण दिवस थिक ।

उपर्युक्त आधार पर कहल जा सकैछ जे दियाबाती हमरा लोकनिक एकटा महान ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पर्व थिक । एक दिस महान पूर्व-पुरुष सभक

गौरवमयी विजय गाथा सभसँ सम्बद्ध अछि तँ दोसर दिस समस्त संसारक हेतु प्रकाश कामनाक प्रतीक थिक । हमरा लोकनिकेँ अंधकारसँ प्रकाश, असत्सँ सत् तथा मृत्युसँ अमृत दिस लऽ जाइछ । ई दीपक पर्व हमरा सभक बाह्य अन्धकारे केँ भगयबाक हेतु नहि, अपितु आन्तरिक अंधकारकेँ सेहो दूर करबाक संकल्प दिवस थिक ।

अतः दियाबाती अर्थक आराधनाक पर्व थिक । एहि दिन हमरा लोकनि अर्थक देवी लक्ष्मीक उपासना करैत छी किएक तँ हमरा लोकनिक जीवनमे अर्थक अनिवार्यता अछि । लक्ष्मी महारानी ओतय अबैत छथि जतय प्रकाश, शुभ आओर स्वस्ति रहैछ ।

भ्रातृद्वितीया– भ्रातृ द्वितीया पर्व कार्तिक शुक्ल द्वितीया दिन मनाओल जाइत अछि । एहि दिन भाइक पूजा बहिनक द्वारा होइत अछि । ई पर्व पौराणिक विधिसँ मनाओल जाइत अछि । सूर्य पुराणमे उल्लेख अछि जे सूर्यक कन्या यमुना अपन भाई यमकेँ नोति पारम्परिक मंगल भागिनी भेल छलीह ।

भ्रातृ द्वितीया दिन बहिन भाइकेँ अरिपन देल पीढ़ी पर बैसबैत छथि । भाइक आँजुरमे पानक पात, सुपारी, कुम्हरक फूल, द्रव्य आदि दऽ–कऽ पढ़ैत छथि–

"यमुना नोतल यमकेँ
हम नोतै छी फल्लाँ भाइकेँ ।
जतेकटा यमुनाक धार
ततेकटा हमर भैयाक आयु ।"

तत्पश्चात् आँजुरक सभ सामग्री अढ़िया वा मटकुरीमे खसा दैत छथि । ई क्रम तीन बेर चलैत अछि । तहन भाय अपन बहिनकेँ किछु दान दैत छथि, यथा साड़ी, गहना, टाका आदि ।

छठि– छठि पावनि कार्तिक मासक शुक्ल पक्षक षष्ठी एवं सप्तमी कऽ मनाओल जाइछ । षष्ठी दिन डुबैत सूर्यकँ एवं सप्तमी दिन उगैत सूर्यकेँ अर्घ देल जाइत अछि । एहि पर्वक महत्त्वक सम्बन्धमे पुराणमे कहल गेल अछि–

"आरोग्यं भास्करादिच्छेत्"

अर्थात् आरोग्य लाभ एहि व्रतक मुख्य उद्देश्य अछि । ई पावनि हिन्दू धर्मक सभ जातिक लोक करैत छथि । सूर्य देवताक व्रत महिला, पुरुष सभ केओ करैत छथि । मिथिलाक घर-घरमे ई पावनि होइत अछि । मिथिलेटामे नहि सम्पूर्ण बिहारमे ई पावनि बड़ धूम-धामसँ लोक पर्वक रूपमे मनाओल जाइत अछि ।

किछु व्यक्ति ई पावनि चैत मासमे सेहो मनबैत छथि । ई व्रत कयलासँ सभ तरहक मनोरथ पूरा भऽ जाइत अछि । एहि पर्वक हेतु बहुत सामग्री जुटाबय पड़ैत छैक जेना-डाली, सूप, कलश, ढाकन, कोसिया, कोनियाँ, माटिक हाथी, ठकुआ, भुसबा, केरा, कुशियार, नारियल, फल, फूल, पान, सुपारी, अंकुरी, धूप, दीप आदि ।

कार्तिक शुक्ल षष्ठी कऽ जखन दिनकर अस्ताचलमे रहैत छथि ओहि कालमे पुरी, पकवान, फल, फूल आदि लऽ अर्घ देल जाइछ, हाथ उठाओल जाइछ । पुन सप्तमी दिन जखन सूर्य उदयाचलमे रहैछ ओहि कालमे अर्घ्य देल जाइछ । एकर बाद सभ गोटे प्रसाद ग्रहण करैछ ।

सामा-चकेवा– ई पावनि कार्तिक पूर्णिमाक धवल वातावरणमे मनाओल जाइत अछि । ई भाइ बहिनक पावनि थिक । वर्षा ऋतुक बाद आकाश स्वच्छ एवं निर्मल रहैत अछि । शरदक इजोरिया साल भरिमे सभसँ मनमोहक होइत अछि, एहन आनन्दमय वातावरणमे सामा-चकेवा पर्व मनाओल जाइछ ।

कार्तिक मासमे सामा नैहर अबैत छथि । हुनका संग चकेवा सेहो अबैत

छथि । महिला लोकनि माटिक सामा, चकेवा, चुगला, झांझी कुकुर, वृन्दावन, पौती, भरिया आदि पड़ीब दिनसँ बनायब प्रारम्भ कऽ दैत छथि । संध्या काल सामा-चकेवाक गीत गबैत छथि । पूर्णिमा दिन भाइक फाँड़ नवका चूड़ा आ गूड़सँ भरैत छथि । सामा-चकेवाक पौतीमे नवका चूड़ा आ गूड़ सनेसवत देल जाइछ । कोड़ल खेतमे वृन्दावन जराओल जाइछ । ढोलिया ढोल बजबैत रहैत अछि । गीत-नादसँ वातावरण गुंजायमान रहैत अछि-

"वृन्दावनमे आगि लागल केओ ने मिझाबय हे,
हमर भैया अपन भैया दौड़ि-दौड़ि मिझाबय हे ।'

ओकर पश्चात् सभ स्त्री ओ धीया-पुता अपन-अपन चंगेरा लऽ कूरखेतमे गोलाकार बैसि जाइत छथि आओर खूब टहंकारसँ गीत गबैत छथि-

"सामा चकेबा अइहऽ हे अइहऽ हे
जोतला खेतमे बैसिहऽ हे बैसिहऽ हे
ढेपा फोरि-फोरि खइहऽ हे खइहऽ हे
सभ रंग पटिया ओछबिहऽ हे ओछबिहऽ हे
ओहि पटिया पर के के बैसै के के बैसे
भैया संग भौजी हे भैया संग भौजी हे
भैयाक हाथमे सोनाक छड़ी, सोनाक छड़ी ।"

कूर खेत सामाक सासुर थिक एहिठाम प्रतिमाक विसर्जन कऽ देल जाइछ ।

तिलासंक्रान्ति- ई पावनि माघ मासक संक्रान्ति दिन मनाओल जाइत अछि । एहि दिन लोक भोरे स्नान कऽ चूड़ा, दही, तिलबा, चुड़-लाडु आदि

जलपान करैत छथि । दुपहरमे खिच्चरि, दही, घी, अँचार, तरुआ, तरकारी आदि भोजन करैत छथि । घरक श्रेष्ठ व्यक्ति अपनासँ छोटकेँ तील-चाउर-गूड़ बँटैत छथि ।

एहि दिन दान कयलासँ बहुत धर्म होइत अछि । लोक गाय, वस्त्र, कम्बल सोना, उड़ीदक दालि, चाउर, तिलबा, चुड़-लाडु आदि दान करैत छथि । किछु व्यक्ति भरि माघ स्नान करैत छथि आ मकर, संक्रान्ति दिन खूब दान करैत छथि । मान्यता अछि जे दान कयलासँ आयु, सम्पत्ति, रूप, गुण आदि बढ़ैत अछि ।

वसंत पंचमी– जगद्धात्री विद्या-दायिनी माता शारदाक पूजा माघ शुक्ल पंचमी तिथि कऽ मनाओल जाइछ । एहि पंचमीकेँ श्री पंचमीक नामसँ सेहो सम्बोधित कयल जाइछ । एहि तिथि कऽ छात्र लोकनि शैक्षणिक स्थल पर श्री सरस्वती माताक मृतिकाक प्रतिमा आनि श्रद्धापूर्वक पवित्र जगह पर ठाँव कऽ बैसबैत छथि । पुनः नियमानुकूल पूजा अर्चना करैत छथि ।

एहि दिन पूजाकर्ता निर्धारित समय पर पूजा स्थल पर आसन लऽ बैसैत छथि । तखन निर्देशित विधिसँ ध्यान, पूजा आ आरती करैत छथि । प्रसाद वितरण कयल जाइछ । प्रसादमे सामयिक फल बैर आ केशौरक प्रधानता रहैत अछि । छात्र-लोकनि दिन भरि गीत-नादक संग-संग कीर्तन, भजन आदि करैत छथि । संध्या समय पुनः आरती कयल जाइछ तदुपरान्त रात्रि जागरणक लेल नाटक वा गायन-वादनक व्यवस्था रहैछ । पुनः षष्ठी दिन प्रातः काल पूजा अर्चना कऽ प्रतिमाक विसर्जन कऽ देल जाइत अछि आ शंखनाद करैत प्रतिमाकेँ नदी अथवा पोखरिमे प्रवाहित कऽ देल जाइछ ।

वसंत पंचमी दिनसँ वसंतक आगमन मानल जाइत अछि । देवताकेँ गुलाल आ अबीर चढ़ाओल जाइत अछि । तहन स्वजनकेँ गुलाल लगयबाक प्रथा प्रारम्भ

होइत अछि । मिथिलांचलक गृहस्थ लोकनि हऽरक पूजा कऽ हऽर ठाढ़ करबैत छथि ।

शिवरात्रिपूजा– बाबा बमभोलाक पूजा तँ प्रत्येक दिन मन्दिरमे घंटानादक संग गुंजायमान रहैत अछि, मुदा फागुन कृष्णचतुर्दशीकेँ किछु विशेष आयोजनक संग मनाओल जाइछ ।

मिथिलामे तीन तरहक मान्यता अछि– पहिल, ई व्रत शिव-पार्वतीक विवाहक उपलक्ष्यमे मनाओल जाइछ । दोसर, एही दिन ओ शिवलिंगक रूपमे आविर्भूत भेलाह । तेसर, एही दिन ओ विषपान कयलनि, तेँ ई व्रत मनाओल जाइछ ।

शिवरात्रि दिन मन्दिरमे भरि राति पूजा होइत अछि । दूध, घृत एवं मधुसँ शिवलिंगक अभिषेक कयल जाइछ । हिनक कथामे एकटा प्रसंग आयल अछि जे शंकरजी पार्वतीकेँ कहलथिन जे शिवरात्रि व्रत कयनिहार हमर कृपासँ विद्या, धन आ कीर्ति लाभ कऽ हमर सान्निध्य प्राप्त करैत अछि, जकर साक्ष्य शिवपुराणमे भेटैत अछि ।

फगुआ (होली)– फगुआ ऋतुराज बसंतक आगमन तिथि फाल्गुनी पूर्णिमा कऽ हर्षोल्लासक संग मनाओल जाइछ । ई जीर्ण-शीर्ण पुरातनक स्थान पर नित्यनूतनक स्थापनाक मंगलपर्व थिक ।

फगुआक सम्बन्धमे अनेक पौराणिक कथा सभ उल्लेखनीय अछि । एकगोट कथाक अनुसार जखन हिरण्यकश्यपु अपन ईश्वर भक्त-पुत्र प्रह्लादकेँ कोनहुँ उपायसँ नहि मारि सकलाह, तखन अपन बहिन होलिकाक कोड़ामे बैसा कऽ जरा कऽ खाक करय चाहलनि मुदा प्रह्लादकेँ किछु नहि भेल, होलिका जरि कऽ राख भऽ गेलीह । दोसर कथाक अनुसारे फगुआ अथवा मदनोत्सव भगवान

शिवक काम-दहन साक्षी थिक । तेसर कथाक अनुसार जखन भगवान श्री कृष्ण दुष्ट सभक दलन कऽ गोपबाला सभक संग रास रचओलनि तँ ओही दिनसँ फगुआक प्रचलन भेल ।

मिथिलाक घर-घरमे फगुआ पर्व मनाओल जाइछ एक-दोसराकेँ रंग-अबीर लगाओल जाइछ । खीर, पुरी, मधुर, माँछ, मौस आदि भोजन करैछ । पुरुष वर्ग तासा, ढोल, झालि आदि वाद्यतालक संग गीत गबैछ ।

अतः होलिका दहन आओर होलिकोत्सव नास्तिकता पर अस्तिकताक, दुर्गुण पर सद्गुण, दानवत्व पर देवत्वक विजयक स्मारक थिक । फगुआक लाल रंग प्रेम एवं बलिदान दुनूक प्रतीक थिक । ई जन-जनकेँ एक सूत्रमे गाँथय वला पर्व थिक ।

जूड़शीतल- जूड़शीतल मिथिलाक एकटा महत्त्वपूर्ण पर्व थिक । एकरा सतुआइन सेहो कहल जाइछ । आन प्रान्तमे वैशाखी पर्वक रूपमे मनाओल जाइछ । मिथिलामे एहि दिन पुरैनिक पात पर भगवतीकेँ सातु, गुड़ आ आमक चटनी चढ़ाओल जाइछ । एतबे नहि बड़ी, पुरी सेहो चढ़ाओल जाइछ । पितर निमित्त जलसँ भरल कलश, सातु, जौ आदि ब्राह्मणकेँ दान देल जाइछ । घरक श्रेष्ठ व्यक्ति जाहि जलसँ भगवतीक पूजा करैछ ओही जलसँ अपनासँ छोटकेँ जूड़बैत छथि । एकर बाद तुलसी चौड़ाक दुनू भाग दू गोट खुट्टा गारल जाइछ आ ओहि पर बल्ला देल जाइछ । बल्लामे सीकक सहारासँ एकटा माटिक कलश व्यवस्थित कऽ देल जाइछ । एहि कलशक पेनमे भूर कऽ सक्कतसँ लगा देल जाइछ । भरि बैसाख स्नान कयलाक बाद कलशमे जल ढारल जाइछ । ई जल ठोपे-ठोपे तुलसीक जड़िमे खसैत रहैत अछि ।

जूड़शीतल दिन चूल्हि नहि जराओल जाइछ । भगवतीकेँ बासि दही-भात भोग लगाओल जाइछ आ अपनो बासिए भोजन करैछ । मुदा आजुक युगमे

माँछ-माँसु खायब सेहो शुरू भऽ गेल अछि । मनोरंजनक लेल महादेवक नचारी गाओल जाइछ एवं एक-दोसराक देह पर थाल-कादो लगाओल जाइछ । ई पंक स्नान एवं फुचुक्काक जल बैसाख-जेठक प्रचण्ड तापसँ होमय बाला रोगसँ बचाव करबैछ ।

ईद, बकरीद, मुहर्रम– मिथिलामे इस्लाम धर्मावलम्बी लोकनि द्वारा ईद, बकरीद ओ मुहर्रम आदि प्रमुख पाबनि-तिहार मनाओल जाइत अछि । एकरा अन्तर्गत हर्ष-उल्लास, विजय ओ शोक आधारित भाव कार्य करैत अछि । एहिसँ समाज आ संस्कृतिक सामंजस्य बनैत अछि । तजिआक अवसर पर सभ समुदायक लोक सम्मिलित होइत अछि । तहिना झरनी गायन सभ समुदायक बीच प्रचलित अछि । आब तँ छठि, होली आदि अवसरपर सभ समुदाय सम्मिलित होइत छथि ।

उपर्युक्त व्रत-उपवास ओ पावनि-तिहारक अतिरिक्त मिथिलामे अनेको उल्लेखनीय पर्व प्रचलित अछि– श्रावण महात्म, श्रावण सोमवारी, बहुलापूजा, कुशी अमावश्या, हरितालिका-व्रत कथा, अनन्त पूजा, पितर पक्ष आ मातृनवमी, गहवा संक्रान्ति, गोवर्धन पूजा, चित्रगुप्त पूजा, अक्षय नवमी, देवोत्थान एकादशी, कार्तिक कृत्य, हरिसौं पावनि, रवि व्रत, पृथ्वी पूजा, तुसारी, नरक निवारण चतुर्दशी, माघ सप्तमी, सपता विपता कथा, अक्षय तृतीया, सोमावती अमावश्या, गंगा दशहरा आदि प्रमुख अछि ।

किछु पावनिक विस्तार ओ उपभोगक परिधि परिवारे धरि सीमित रहैछ तँ किछुक व्याप्ति व्यापक सामाजिक परिवेश धरि । किछु पावनि भाइ-बहिनसँ सम्बन्धित अछि तँ किछु सूर्य, चन्द्रमा, शिव, सरस्वती, गौरी, कृष्ण सदृश विभिन्न देवी-देवतासँ । अन्ततः कहल जा सकैछ जे सुदीर्घ परम्परासँ पोषित ई पावनि-तिहार सभ निश्चित रूपसँ व्यावहारिक जीवनक कोनहु दृढ़ वैज्ञानिक किंवा बौद्धिक

अनुभवक तार्किक परिणति थिक जे मानसिक उल्लास, आध्यात्मिक तृप्ति, स्वास्थ्यक प्रति सजग दृष्टिकोण ओ सामाजिकताक भावनासँ ओत-प्रोत अछि । आइ व्यस्तता ओ आधुनिकताक होड़मे हमरा लोकनि परम्पराक निर्वाहमे कोताही कऽ रहल छी जकर परिणामस्वरूप भविष्यमे कतेको हमर रीति-नीति ओ लोक-संस्कारक विलुप्त भऽ जयबाक संभावना बनि रहल अछि ।

◆◆◆

प्रश्न ओ अभ्यास

1. मिथिलाक कोन पावनि-तिहार अहाँके सभसँ नीक लगैत अछि, आ किएक ?
2. मिथिलाक कोनो एक पावनि पर 150 शब्दमे एक निबंध लिखू ।
3. शारदीय नवरात्रा अथवा दियावाती अथवा वसंत पंचमी कोनो एक पर निबंध प्रस्तुत करू ।
4. व्रत-उपवास ओ पावनि-तिहारक महत्त्व पर प्रकाश दिअ ।
5. पावनि-तिहारमे प्रयुक्त मुख्य सामग्रीक नाम लिखू ।
6. पारिवारिक पावनि आ सामाजिक पावनिमे अन्तर स्पष्ट करू ।
7. भाइ-बहीन पर आधारित पावनि सभक चर्चा करू ।
8. "मिथिलामे पावनि-तिहारक समृद्ध परम्परा रहल अछि" एकर विवेचन करू ।

9. पावनि-तिहार स्वास्थ्य वर्द्धक, आध्यात्मिक तृप्ति एवं सामाजिकता प्रदान करैछ, कोना ?

10. मिथिलाक मुख्य बीस गोट पावनिक नाम एवं ओकर सोझाँ मासक नाम लिखू ।

11. राम-कृष्णसँ सम्बन्धित पर्वक परिचय दिअ ।

12. शक्तिसँ सम्बन्धित पर्व पर प्रकाश दिअ ।

13. शिव विषयक व्रत-उपवास ओ पावनि-तिहारसँ परिचय कराउ ।

14. सूर्य-चन्द्रमा पर आधारित पावनि-तिहारक विषयमे लिखू ।

15. पावनि-तिहार मानसिक पवित्रता दैछ एवं समाजकेँ प्रेरित करैछ - कोना ?

◆◆◆